गुन केते कहूं मेरे पिउ जी

गुन केते कहूं मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी।
ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी।।

कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी।
तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी।।

सेहेजल सुख में झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी।
सो माया में इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी।।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।
निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।।

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।।